ISWK SHARING KNOWLEDGE

Class VII

Subject- Hindi Second Languag

Topic-

31/01/2021

By- नीलम सौंखला

©ISWK

SuccessCDs

'अपूर्व अनुभव'

लेखक – तेत्सुको कुरियानागी

CLASS 7

NCERT Syllabus

Hindi Chapter 10

पाठ का सारांश

अपूर्व अनुभव

पाठ का सारांश

यह कथा मूलतः जापानी भाषा में लिखा गया एक संस्मरण हैं इसमें तोमोए में पढ़ने वाले दो बच्चों के विषय मे बताया गया है। यहाँ हरेक बच्चा एक-एक पेड़ को अपने खुद के चढ़ने का पेड़ मानता था। वह उनकी निजी संपत्ति होती थी। वहाँ किसी और को आना हो तो बड़ी शिष्टता से पूछना होता था 'क्या मैं अंदर आ जाऊँ?'

तोत्तो-चान का पेड़ मैदान के बाहरी हिस्से में कुहोन्बुत्सु जाने वाली सड़क के पास था। उस बड़े से पेड़ पर चढ़ने पर पैर फिसलने लगते थे लेकिन ठीक से चढ़ा जाए तो जमीन से छह फुट की ऊँचाई पर स्थित द्विशाखा तक पहुँचा जा सकता था। वह झूले जैसी आरामदेह जगह थी। तोत्तो-चान अकसर खाने की छुट्टी के समय या स्कूल के बाद उस पर चढ़ी मिलती। वहाँ से वह दूर आकाश में या सड़क पर आ-जा रहे लोगों को देखती।

तोत्तो-चान ने सभागार में शिविर लगने के दो दिन बाद बड़े साहस का एक काम करने का फैसला लिया। उसने यासुकी-चान को अपने पेड़ पर आने का न्यौता दिया। उसे पोलियो था। वह किसी पेड़ को अपना नहीं मानता था क्योंकि पेड़ पर चढ़ना उसके लिए असंभव था। तोत्तो-चान और यासुकी-चान के इस कार्यक्रम का पता दोनों में से किसी के माता-पिता को न था। यदि उन्हें पता होता तो दोनों को डाँट पड़ती।

तोत्तो-चान ने घर से निकलते समय माँ से झूठ कहा कि वह यासुकी-चान के घर जा रही है। यही कारण था कि उसने माँ की नज़रों में नहीं देखा। वह अपने जूते के फीते पर निगाहें गड़ाए रही। रॉकी उसे छोड़ने स्टेशन तक आया तो आखिरकार उसने उसे बता ही दिया कि वह क्या करने जा रही है।

स्कूल पहुँचने पर मैदान में उसे यासुकी-चान मिला। दोनों बहुत ही अधिक उत्तेजित थे। एक दूसरे से मिलकर वे हँस पड़े। तोत्तो-चान उसे अपने पेड़ के पास ले गई। वहाँ वह चौकीदार के यहाँ से एक सीढ़ी उठाकर लाई। उसे तने के सहारे से लगाकर द्विशाखा तक पहुँचाया। स्वयं कुरसी के सहारे ऊपर चढ़कर उसने सीढ़ी पकड़ ली और यासुकी-चान को ऊपर चढ़ने के लिए कहा। लेकिन यासुकी-चान के हाथ पैर इतने कमजोर थे कि वह पहली सीढ़ी पर भी बिना सहारे के नहीं चढ़ पाया। तोत्तो-चान नीचे उतर आई और उसे पीछे से धकियाने लगी। लेकिन वह स्वयं इतनी छोटी थी कि क्या करती। दोनों निराश हो गए। अचानक तोत्तो-चान को एक बात सूझी। वह फिर चौकीदार के छप्पर की ओर दौड़ी और वहाँ से तिपाई सीढ़ी घसीट लाई। पसीने से लथपथ उसने तिपाई सीढ़ी को द्विशाखा से लगा दिया और यासुकी-चान को सहारा देकर धीरे-धीरे सीढ़ी पर चढ़ाया। दोनों जान न पाए कि यासुकी-चान को ऊपर चढ़ने में कितना समय लगा। यासुकी-चान सीढ़ी के ऊपर तो पहुँच गया और तोत्तो-चान सीढ़ी से छलांग मारकर पेड़ पर पहुँच गई लेकिन यासुकी-चान को वहाँ से सीढ़ी पर लाना बहुत मुश्किल हो गया। दोनों को अपनी सारी मेहनत बेकार लगने लगी। तोत्तो-चान का रोने का मन होने लगा लेकिन वह रोई नहीं। उसने यासुकी-चान को लेट जाने को कहा और उसका पोलियो वाला हाथ पकड़कर उसे द्विशाखा पर खींचने की कोशिश करने लगी।

उस समय अगर कोई बड़ा उन दोनों को देखता तो जरूर—चीख पड़ता। दोनों बहुत खतरा उठा रहे थे। काफी मेहनत के बाद दोनों आमने-सामने द्विशाखा पर थे। पसीने से लथपथ तोत्तो-चान ने सम्मान से यासुकी-चान का अपने पेड़ पर स्वागत किया। यासुकी-चान ने झिझकते हुए मुस्कुराकर पूछा, "क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?"

उस दिन यासुकी-चान को एक नई दुनिया की झलक दिखाई दी। वहाँ बैठे-बैठे दोनों देर तक इधर-उधर की बातें करते रहे। यासुकी-चान ने उस दिन पहली बार तोत्तो-चान को टेलीविजन के बारे में बताया जिसके बारे में उन दिनों कोई नहीं जानता था। यासुकी-चान को उसकी अमेरिका में रहने वाली बहन ने उसके बारे में बताया था।

यासुकी-चान और तोत्तो-चान पेड़ पर बैठे बेहद खुश थे। यासुकी के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और आखिरी अवसर था।

शब्दार्थ–पृष्ठ संख्या-75 : *अपूर्व*–जो पहले कभी न हुआ हो। ***अनुभव***– तजुर्बा ज्ञान। ***सभागार***–वह स्थान जहाँ लोग एकत्र होकर किसी विषय पर विचार-विमर्श करते हैं। ***शिविर***–कैंप। ***साहस***–हिम्मत। ***भेद***–रहस्य। ***न्योता***–बुलावा देना, आमंत्रित करना। ***द्विशाखा***–दो डालियों को मिलाने वाली, जगह। ***आरामदेह***–आराम देने वाला।

पृष्ठ संख्या-76 : *निजी सम्पत्ति*–अपनी सम्पत्ति। ***शिष्टता***–अच्छा व्यवहार। ***आमंत्रित***–बुलाना। ***सूना***–सुनसान, निर्जन। ***उत्तेजित***–उत्साहित। ***उल्लास***–आनंद, जोश। ***ठिठियाकर हँसना***–बहुत तेज हँसना।

पृष्ठ संख्या-77 : *कोशिश*–प्रयत्न। ***धकियाना***–धक्का देना। ***नाजुक***–मुलायम। ***सहायता***–मदद। ***हताश***–निराश। ***हार्दिक***–दिल से। ***इच्छा***–चाह।

पृष्ठ संख्या-78 : *शक्ति*–ताकत। ***तरबतर***–लथपथ। ***रम जाना***–घुलमिल जाना। ***ताप***–गर्मी। ***जूझना***–संघर्ष करना।

पृष्ठ संख्या-79 : *जोखिम*–खतरा। ***सम्मान***–आदर।

पृष्ठ संख्या-80 : *गप्पें लड़ाना*–व्यर्थ की बातचीत। ***बेहद***–बहुत। ***अंतिम***–आखिरी। ***मौका***–अवसर।

चत्र के आधार पर पाठ की व्याख्या --

I. बहुविकल्पीय प्रश्न

(*i*) 'अपूर्व अनुभव' पाठ साहित्य की किस विधा से संबंधित है?

(क) कहानी (ख) नाटक

(ग) संस्मरण (घ) यात्रा-साहित्य।

(*ii*) तोत्तो-चान ने एक साहस पूर्ण कार्य करने का निर्णय किया, जिसका पता ..... था।

(क) उसकी माता को (ख) उसके पिता को

(ग) उसके मित्र को (घ) किसी को भी नहीं।

(*iii*) तोमोए में पेड़ और बच्चों के बीच क्या संबंध है?

(क) प्रत्येक बच्चा एक पेड़ लगाता है (ख) हर बच्चा एक पेड़ को अपनाता है

(ग) हर बच्चा पेड़ों की देखभाल करता है (घ) प्रत्येक बच्चा प्रत्येक पेड़ पर चढ़ता है।

(*iv*) तोत्तो-चान के पेड़ की द्विशाखा किसी झूले जैसी ..... जगह थी।

(क) आरामदायक (ख) हानिप्रद

(ग) लाभदायक (घ) स्वास्थ्य प्रद।

(*v*) तोमोए में बच्चे पेड़ को कौन-सी संपत्ति मानते हैं?

(क) सार्वजनिक संपत्ति (ख) पराई संपत्ति

(ग) निजी संपत्ति (घ) पारिवारिक संपत्ति।

(*vi*) 'अगर बड़े सुनते तो जरूर डाँटते'—तोत्तो-चान को बड़े क्यों डाँटते?

(क) बिना बताए घर से बाहर जाने के लिए

(ख) छुट्टियों में स्कूल जाने के लिए

(ग) मोटे से पेड़ पर चढ़ने के लिए

(घ) पोलियो ग्रस्त यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाने के लिए।

(*vii*) यासुकी-चान का घर इनमें से कहाँ था?

(क) डेनेनचोफु में (ख) तोमोए में

(ग) कुहोन्बुत्सु में (घ) हिरोशिमा में।

(*viii*) तोत्तो-चान ने अपनी योजना का सच सर्वप्रथम किसे बताया?

(क) यासुकी-चान को (ख) अपनी माँ को

(ग) यासुकी-चान की माँ को (घ) रॉकी को।

Ans.

(*i*) (ग) (*ii*) (घ) (*iii*) (ख) (*iv*) (क)

(*v*) (ग) (*vi*) (घ) (*vii*) (क) (*viii*) (घ)

तोत्तो-चान ने अपने पो लयो ग्रस्त मत्र यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ा कर साहस भरा काम कया था।

जियुगाओका
BRS MEDIA
BRS MEDIA PRIVATE LIMITED
http://www.itsbrsmedia.com
तोत्तो-चान की योजना के बारे में उसकी माता को पता नहीं था।

इस कारण वह पेड़ पर चढ़ने में असमर्थ है। दोनों पेड़ पर चढ़ने की योजना बनाते हैं। लेकिन वे यह बात अपने माता – पिता को नहीं बताते। तोत्तो – चान अपनी माँ से झूठ बोलती है कि वह यासुकी – चान के घर जा रही है।

यासुकी – चान फिर से प्रयास करता है।

भयंकर गर्मी के दिन में वे दोनों संघर्ष करते हैं।

तोत्तो – चान किसी भी तरह

यासुकी – चान को पेड़ पर चढ़ाकर

नई – नई चीज़े दिखाना चाहती है।

वह उसे हर सीढ़ी पर चढ़ने में मदद करती है।

https://youtu.be/-u643RuIUuQ

Link -1 lesson video summary

https://www.youtube.com/watch?v=6OVKq8Yc6WI

Link-2 lesson with meaning